सत्यमेव जयते

प्रयास

द्वादश अंक : 2022-23

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

उपेन्द्र सिंह तोमर
प्रशिक्षण सहायक
केंद्रीय विद्यालय संगठन,
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर

ममता पाठक
केंद्र अधीक्षक, उत्तर-मध्य रेल
क्षेत्र प्रबंधक कार्यालय, ग्वालियर

पवन कुमार
स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर

स्वर्णलता गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

संरक्षक
प्रिया पारिख
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

प्रकाशक
दीन दयाल वर्मा
सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

संपादक मंडल
संजीव कुमार झांजी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
स्वर्णलता गुप्ता सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
निधि गौतम कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - ग्वालियर
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना/लेख/व्यंग्य	रचनाकार/लेखक (सर्व श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश		
2.	प्रकाशकीय		
3.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	मोनिका लोधी	01
4.	तिरंगा (राष्ट्रहित में)	संजय कुमार सोनी	02
5.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	रीना रावत	03
6.	तन निर्मल हो, मन निर्मल हो	डॉ. सौरभ दीक्षित	04
7.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	कृष्णा मीणा	05
8.	वजूद	अर्चना मानव	07
9.	सतर्कता एवं जागरूकता	स्वर्णलता गुप्ता	11
10.	यात्रा के साथ सीखना	शैलेन्द्र सिंह	12
11.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	किमी चौहान	14
12.	क्रियाशील रहूंगा	मनजीत कुमार सिंह	15
13.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	चंचल आर्य	16
14.	जब मैंने भाला उछाला	मनजीत कुमार सिंह	17
15.	भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका	निशा जाटव	18
16.	कलम (लेखनी)	श्रीमती उमा उपाध्याय	19
17.	भारतीय राजभाषा	गौरव कुमार तिवारी	21
18.	दिवास्वप्न	शैलेन्द्र सिंह	24
19.	उनकी लत की बीमारी	रूपेश कुमार महतो	26
20.	भाग रहा पूरा संसार	रूपेश कुमार महतो	26
21.	चिंतन	डॉ. ब्रजेश कुमार पाण्डेय	27
22.	आत्म विश्वास में छिपा सफलता का रहस्य	अमर पाल सिंह	29
23.	धातु विषाक्तता	चंद्रकांत मौर्य	32
24.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास), ग्वालियर		35

सत्यमेव जयते

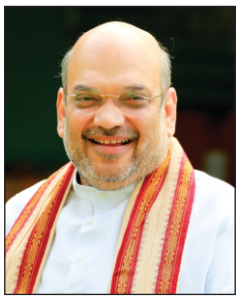

गृह मंत्री एवं
सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

संदेश

प्रिय देशवासियों!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।" यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी नराकास, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' के वार्षिकांक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सशक्त कदम है। हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि कार्यालय के कार्यों में सरल हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे हिंदी की तीव्र प्रगति संभव हो सके।

संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिकाएं न सिर्फ राजभाषा हिंदी के अनुपालन के संवैधानिक और सांविधिक दायित्व का निर्वहन करती हैं बल्कि ये कार्मिकों के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं और उन्हें अपना विचार और चिंतन साझा करने का मंच भी प्रदान करती हैं।

अपने दैनंदिन कार्यों में व्यस्तता के बावजूद 'प्रयास' के लिए रचना प्रेषित करने वाले रचनाकारों एवं पत्रिका के संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई देती हूं। आशा करती हूं कि यह अंक हिंदी के प्रयोग को आशानुकूल रूप से बढ़ाने में सक्षम होगा और आप सभी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक बधाई।

(प्रिया पारिख)
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर
एवं
महालेखाकार

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशकीय

नराकास, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' के 12वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए हर्ष का विषय है। नराकास कार्यालयों के रचनाशील अधिकारियों/कर्मचारियों के निरंतर सहयोग एवं हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा के कारण ही यह पत्रिका आकार लेने में सफल हुई है।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करने तथा कार्यालय के कार्मिकों के भावों की अभिव्यक्ति के साथ उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को भी मुखरित होने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करने में अहम् भूमिका निभा रही हैं जिससे कार्मिकों में हिंदी के प्रति स्नेह, लगाव और रुचि पैदा होती है तथा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा मिलता है। नराकास सदस्य कार्यालयों की संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' भी विविध रचनाओं के साथ, न केवल ज्ञान एवं प्रेरणा प्रदान कर रही है, बल्कि गृह मंत्रालय एवं मुख्यालय के निर्देशों का पालन सुनिश्चित करती हुई हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान हेतु मैं समस्त रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

मंगलकामनाओं सहित...

(दीन दयाल वर्मा)
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर
एवं
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

मोनिका लोधी
कक्षा– ग्यारहवीं 'ब'
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

नारी का सम्मान करना व रक्षा करना भारत की पहली संस्कृति है। नारियां जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने सारे कर्तव्य निभाती हैं। एक नारी मां, बहन, बेटी का दायित्व भी निभाती है। इस देश में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है, वहीं दूसरी ओर उसे कमजोर भी माना जाता है। प्राचीन काल में नारी को उसका उचित स्थान नहीं दिया जाता था। नारी ने रिश्तों को निभाने के लिए और परिवार को संपन्न रखने के लिए कई अत्याचार सहे। घर पर भी लड़कियों को लड़कों के समान अधिकार नहीं दिए जाते थे। समाज में कई लोगों ने अपने गलत दृष्टिकोण के कारण नारियों के साथ दुर्व्यवहार भी किया। महाभारत काल में दुर्योधन जैसे अत्याचारी और क्रूर इंसान ने द्रौपदी को भरी सभा में वस्त्रहीन करने की चेष्टा की थी, यह एक निंदनीय कांड था। युधिष्ठिर जैसे व्यक्ति ने जुए में जीतने के लिए अपनी पत्नी द्रौपदी को भरी सभा में दांव पर लगा दिया था। इस युग में नारी का अपमान और तिरस्कार हुआ। इस काल को नारियों के पतन काल के रूप में देखा जाता है। इस युग में कबीर ने महिलाओं की आलोचना की थी। कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में महिलाओं को बाधक बताया। वहीं तुलसीदास ने नारी का सम्मान किया। इसी युग में सूरदास ने नारी को राधा के रूप में प्रस्तुत किया था। रीतिकाल में कवियों ने नारियों को वासना पूर्ति का एक साधन बताया था।

मुगलों के समय में मीना बाजार लगाया जाता था और नारी को विलासिता की वस्तु समझा जाता था। उस समय नारियों को पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं को सहन करना पड़ता था। बहुत छोटी उम्र में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था।

उस समय पुरुष अपनी नारियों को घरों में बंद करके रखते थे और अपना हुकुम चलाते थे। शिक्षा से महिलाओं की कोसों दूरी थी, उन्हें किसी लायक नहीं समझा जाता था।

आधुनिक युग में कई कवियों ने महिलाओं के ऊपर हो रहे अत्याचारों से उन्हें मुक्त करवाने का प्रयास किया। गुप्त जी और पंत जी ने भी महिलाओं की इस अवस्था के प्रति दुःख जताया और अपने शब्दों में उसे व्यक्त किया।

तिरंगा (राष्ट्रहित में)

संजय कुमार सोनी
सहायक कुल सचिव–पुस्तकालय
राजन चौधरी– शोधकर्ता
अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर

ये तिरंगा जो हमारी शान है, भारत माता की आन है।
धरती माँ की लाज बचाने, हर भारतवासी कुर्बान है।

उठो नौजवानों, अपने ज्ञान चक्षु खोलो,
भारत माता के चरणों को, अपने अश्रु से धो लो।

विजयी तिरंगों की नीलामी, जब बाजारों में होती है,
गिरते हैं जब आंसू तब भारत माता रोती है।

जब उग्रवादियों की संगोष्ठियां, भरे बाजारों होती हैं,
तब क्या सारी जनता आँखों पर पट्टी बांध कर सोती है?

अरे खून कभी नहीं सोता है, केवल आजादी को रोता है,
जब खून लाल रंग लाता है, भारत माता को यह भाता है।

आजादी के स्वंयवर में जब रक्त की माला गिरती है,
तब हरियाली भारत माता की कितनी सुंदर लगती है।

हरे–भरे तब खेत सभी बाराती बनकर आते हैं।
पर्वत–नदी–तालाब, सभी आजादी की माला लाते हैं।

विदेशी झंडों को काट, सभी पाताल में वो ले जाते हैं,
पाताल से नींव बनाकर के उस पर तिरंगा लहराते हैं।

जिस पर सारा भारत खड़ा है, एक ऐसी नींव बनाते हैं,
आओ हम सब मिलकर के भारत को स्वर्ग बनाते हैं।

जय हिंद – जय भारत

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

रीना रावत
कक्षा– ग्यारहवीं 'ब'
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

नारी का सम्मान करना व रक्षा करना भारत की पहली संस्कृति है। नारी के असंख्य रूप हैं, वह कभी मेनका बनती है तो कभी दुष्यंत के लिए शकुंतला, शिवजी के लिए पार्वती और राम के लिए सीता। नारियां कभी सिंहनी तो कभी चंडी, कभी विलासिता की प्रतिभा तो कभी त्याग की देवी बनती हैं। नारी एक है परंतु उसके रुप अनगिनत हैं। शास्त्रों और साहित्य में वर्णित है कि वैदिक युग में नारी को बेहद सम्मान प्राप्त था। नारी उस समय स्वतंत्र थी, उस पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं था और वह यज्ञों और अनुष्ठानों में भाग लेती थी। उस समय कहा जाता था ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमंते तत्र देवताः''। इसका अर्थ है कि जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। लेकिन इस कथन की मान्यता हर युग के समाज में भली भांति नहीं की गयी। समय का चक्र घूमा और साहित्य ने नारी की अलग छवि प्रस्तुत की। रामायण में रावण जैसे अत्याचारी ने सीता का हरण कर लिया और सीता ने अपने आप को पवित्र साबित करने के लिए अग्नि परीक्षा दी थी। प्राचीन काल में नारी को उनका उचित स्थान नहीं दिया जाता था। नारी ने रिश्तों को निभाने और परिवार को सहेजने के लिए कई अत्याचार सहे। घर पर भी लड़कियों को लड़कों के समान अधिकार नहीं दिए जाते थे, कई लोगों ने अपने गलत दृष्टिकोण के कारण उनके साथ दुर्व्यवहार भी किया। आज भी कई घरों में लड़के को 'वंश का चिराग' माना जाता है।

नारी को पहले पराया धन समझा जाता था प्राचीन समय में लोग समझते थे कि लड़की तो विवाह करके चली जाएगी और तब लोगों की सोच थी कि लड़कियां पढ़–लिखकर क्या करेंगी उन्हें तो शादी करके रसोई ही संभालनी है। जबकि लड़के खानदान का नाम रोशन करेंगे और वंश को आगे बढ़ाएंगे। लड़के–लड़की में भेदभाव भी किया जाता था। लड़कों को हर मामले में छूट थी और शिक्षा पर उनका ज्यादा अधिकार होता था। जबकि लड़कियों को घर का कामकाज करना सिखाया जाता था परंतु अब समय बदल रहा है और लड़कियों को भी लड़कों के समान अधिकार दिए जा रहे हैं।

तन निर्मल हो, मन निर्मल हो

डॉ. सौरभ दीक्षित
सह–प्राध्यापक,
भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर

तन निर्मल हो, मन निर्मल हो,
निर्मल हो घर द्वार।
निर्मल गांव, शहर, गलियारे
निर्मल हो संसार।।

आसमान में शुद्ध हवा हो,
शून्य बिना असबाब।
नदियों में बस निर्मल जल हो,
न नाली की धार।।

सागर में भी जल निर्मल हो,
हो सही सोच विस्तार।
खेतों में फसलें निर्मल हों,
निर्मल जीवन विस्तार।।

मंदिर से जो हो निस्तारित,
पुनः करे उपयोग।
शांत हृदय से मनन किया तो,
निर्मल होगा भाव।।

स्वच्छ रहे हम अंतर्मन से,
सबको दे संदेश।
निर्मलता में छिपा हुआ है,
ईश्वर का संवाद।।

स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
रहे पर्यटक वास।
निर्मल थल, जल, नभ में होता,
सब जीवों का वास।।

पन्नी, कचरा 'रक्त बीज' सा,
करता महाविनाश।
गांधी जी सा निर्मल जीवन,
करता सदा विकास।।

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

कृष्णा मीणा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर डबरा, ग्वालियर

नारी पूजा, श्रद्धा का प्रतीक है,
नारी शक्ति है, सम्मान है,
नारी गौरव है, अभिमान है,
नारी द्वारा रचा विधान है,
नारी प्रेम, स्नेह, करूणा, रौद्र तेज है
हे नारी ! तुम्हें कोटि–कोटि प्रणाम है।

देश की महिलाएं एक ओर साहित्य, संगीत, नृत्य, खेल, मीडिया, उद्योग, राजनीति, फिल्म इंडस्ट्रीज इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहीं हैं, वहीं वैज्ञानिक क्षेत्र में पर्यावरण विद्, रक्षा क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है जो निश्चय ही भारत के विकास में सहायक है।

प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में ''हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं बल्कि इस रोशनी की लौ हैं, अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत हैं।''

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के उदाहरण पेश किए हैं और वर्तमान समय में भी महिलाएं भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सर्वप्रथम बात करना चाहूंगी उन स्वतंत्रता सेनानी महिलाओं की, जो भारत छोड़ो आंदोलन और अन्य स्वतंत्रता आंदोलनों की कार्यकारिणी रहीं जैसे कि कस्तूरी बाई, ये भारत छोड़ों आंदोलन में सक्रिय रहने के कारण गिरफ्तार हुईं और इन्हें यरवदा जेल जाना पड़ा।

सरोजिनी नायडू – जिन्हें 'भारत कोकिला' कहा जाता है, अंग्रेजों से भारत की आजादी के संघर्ष में भाग लेने वाली पहली महिलाओं में से एक थीं, इनका वाक्य था ''जब अत्याचार होता है तो एकमात्र स्वाभिमानी बात यह है कि उठो और कहो कि यह आज बंद होगा क्योंकि मेरा अधिकार न्याय है।'' ये राजनीतिक कार्यकर्ता, नारीवादी कवयित्री और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष रहीं तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें पुणे आगा खान महल में 10 महीने जेल में रखा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया।

राजनैतिक रूप से सक्रिय रही अरूणा आसफ अली 'नमक सत्याग्रह' में अंग्रेजी हुकूमत ने इन्हें एक साल के लिए जेल में कैद कर दिया। 9 अगस्त 1942 को मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में इन्होंने राष्ट्रीय

ध्वजारोहण समारोह का नेतृत्व किया। सरला देवी ने महिलाओं के लिए शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया और भारत के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। वह संयुक्त राष्ट्र की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष थीं और स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत थीं, इन्होंने लंदन वाशिंगटन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। सामाजिक कार्यकर्ता सिंधु ताई (पदम श्री 2021) अनाथ बच्चों की परवरिश करती हैं। पर्यावरण विद के रूप में जानी जाने वाली तुलसी गौड़ा (पदम श्री 2021 में) 'वन विश्व कोष' पुकारी जाती हैं। रक्षा क्षेत्र में अवनी चतुर्वेदी लड़ाकू विमान (मिग–21) की उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला हैं। खेल क्षेत्र में ओलंपिक में वॉशिंगटन मेडल जीतने वाली देश की पहली महिला मैरीकॉम तथा ओलंपिक कांस्य पदक जीतने वाली प्रथम भारतीय महिला पी.वी. सिंधु हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में महिला वैज्ञानिक टेसी थोमस 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया' के रूप में जानी जाती हैं तथा इन्होंने अग्नि–5 मिसाइल के लिए परियोजना निदेशक के तौर पर काम किया। वहीं अगर शिक्षा क्षेत्र की बात की जाए तो शकुंतला देवी के नाम सबसे तेज मानव संगणना का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड अंकित है।

अभी हाल ही में चंद्रयान–3 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में लगभग 54 महिलाएं इंजीनियर वैज्ञानिक हैं जिनका भारतीय विकास में योगदान है। एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष अरुंधति भट्टाचार्य का योगदान भी उल्लेखनीय है। भारत के विभिन्न प्रांतों में काम करने वाली कर्मचारी वर्ग की महिलाएं या सामाजिक घरेलू महिलाएं भी विभिन्न प्रकार से विभिन्न रूपों में भारत के विकास में अपना योगदान देती हैं।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्टैंड–अप–इंडिया जैसी अनेक योजनाएं प्रारंभ की हैं जिससे देश की महिलाएं देश के विकास में आगे आ सकें तथा अपना पूर्ण सहयोग दे सकें। महिलाएं भी पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करें तो वर्ष 2025 तक भारत की वार्षिक जीडीपी में लगभग 2.9 ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि हो सकती है। चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या वैज्ञानिक, रक्षा क्षेत्र हो या शिक्षा, पर्यावरण का क्षेत्र हो या सामाजिक, चाहे भारतीय परिवार के एक घर की बात हो या फिर पूरे भारतवर्ष की, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक भारत के विकास में महिलाओं का सराहनीय योगदान रहा है। अतः मैं चाहूंगी कि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए काम करने का, देश के विकास में अपना योगदान व सेवा देने का और अधिक मौका दिया जाए जिससे देश के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और अन्य सभी क्षेत्रों में भारत श्रेष्ठ नजर आए।

जय हिंदी, जय हिंद, जय भारत

वजूद

अर्चना मानव
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम), मध्य प्रदेश, ग्वालियर

जन्म लिया, पहचान पिता से मिली,
शादी पश्चात् नाम पति का मिला।
पूरी ज़िंदगी औरों के सहारे चली,
जब अत्याचार हुआ तब साथ न मिला।
कब तक अन्याय सहती रहेगी नारी,
अब तो अपने वजूद की तलाश कर।
सोलह श्रृंगार बढ़ाए तन की कांति,
परंतु संघर्ष करती नारी होती प्रेरणादायी।
इसलिए कर दिखाओ कुछ ऐसा मानवी,
दुनिया के लिए मिसाल बन जाए हर तरुणी।।

वास्तविकता है :–

"सोलह श्रृंगार करती महिलाओं से कई गुणा ज्यादा आकर्षक संघर्ष करती महिलाएं हैं।"

अमूमन ऐसा होता है कि महिला सशक्तिकरण का ज़िक्र छिड़ते ही हमारे ज़ेहन में उन सफल महिलाओं की तस्वीरें उभरने लगतीं हैं जो किसी न किसी मल्टीनेशनल कंपनी की सीइओ हैं या कोई बड़ी सामाजिक कार्यकर्ता या फिर कोई सेलिब्रिटी।

क्यों हम सब्जी बेचने वाली महिला, घरेलू कामगार, महिला कैब ड्राइवर या मजदूरी करने वाली महिला को सशक्तिकरण से जोड़ कर देखने के आदी नहीं हैं ? क्यों इन महिलाओं के संघर्ष, चकाचौंध भरी महिलाओं की उपलब्धियों के नीचे दबकर रह जाते हैं ? राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब समाज में रहने वाला हर व्यक्ति आत्मनिर्भर हो, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। हर किसी का अपना एक वजूद हो, उसकी अपनी एक अलग पहचान हो, तभी सही मायनों में हमारा राष्ट्र विकसित कहलाएगा।

आज हम बात करते हैं एक ऐसी आम महिला की जिसके उठाए हुए एक कदम से न जाने कितनी अत्याचार सह रही महिलाओं को अपनी बेबसी की जंजीरों को तोड़ कर कुछ अपने लिए कर गुजरने की प्रेरणा मिली।

कहानी की शुरूआत होती है मुंबई शहर की एक साधारण सी महिला शांति से, जिसके दो बच्चे हैं। पति बुरी आदतों की गिरफ्त में है, इसी कारण घर की स्थिति भी ठीक–ठाक नहीं है। शांति भी ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं है, जिस वजह से वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज भी नहीं उठा पाती है क्योंकि वह सोचती है कि अगर पति का घर छोड़ कर चली गई तो अपने दो बच्चों को लेकर कहां जाएगी, उन्हें क्या खिलाएगी ? परंतु समयचक्र तो देखिए, पति की किडनी फेल हो जाने की वजह से उसकी मृत्यु हो जाती है। अब शांति के पास सिर्फ दो ही विकल्प बचते हैं या तो वह चूड़ियां पहन कर घर पर बैठे या समाज की फ़िक्र न करते हुए बाहर कुछ काम करने को जाए। परंतु उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या काम करे ? इसलिए उसने दूसरे के घर जाकर खाना बनाने का काम शुरू किया। वह कुछ किताबों से, कुछ मोबाइल से और टी.वी. देखकर काफी तरह के भोजन बनाना सीख गयी। उसके हाथों में गजब का जादू था, जब भी वह खाना बनाती तो लोग उंगलियां चाटते रह जाते। एक दिन की बात है जिसके घर वह खाना बनाने जाती थी, उसके यहां 20–30 ऑफिस जाने वाले युवक–युवतियों की एक पार्टी रखी गई थी। उसने जो कुछ नए व्यंजन बनाने सीखे थे उस दिन वे सारे बनाए। सभी लोगों ने बहुत तारीफ की। कुछ लोगों ने कहा कि अगर आपके हाथ का बना भोजन प्रतिदिन हम लोगों को खाने को मिल जाए तो मजा आ जाएगा, क्यों न आप अपना एक टिफिन सेंटर खोल लें। वैसे भी हम लोग यहां अकेले रहते हैं, खाना ढंग से बन नहीं पाता, अगर हम लोगों को प्रतिदिन मां के हाथों जैसा बना हुआ खाना मिल जाए तो इससे अच्छा और क्या होगा। लोगों ने कुछ–कुछ पैसे भी दिए ताकि वो उतने सारे लोगों के खाने के लिए राशन का सामान खरीद सके। शांति को भी लगा कि चलो ठीक ही है कुछ और पैसे हो जाएंगे तो बच्चों को अच्छी शिक्षा तो दे पाउंगी। कुल मिलाकर लगभग 16 हजार रुपए जमा हो गए। उसमें से कुछ का राशन और 25–30 लोगों का खाना बनाने के लिए बरतन वगैरह लेकर आ गई। वह अपने छोटे से घर में ही सुबह 4 बजे उठकर खाना बनाने की तैयारी में लग जाती ताकि 8 बजे तक सभी लोगों के लिए नाश्ता तैयार कर सके, उसके बाद दोपहर के खाने की तैयारी कर सके। लोग आकर अपना नाश्ता ले जाते, फिर दोपहर में वह स्वयं ही सबके बताए गए पते पर टिफिन पहुंचा देती। लगभग

दो–तीन महीने बीत गए, आमदनी अच्छी होने लगी, उसके बनाए हुए खाने की तारीफ भी उस शहर में काफी होने लगी। परंतु अकेले व्यवस्था करते – करते उसकी हालत थोड़ी खराब रहने लगी। उसके आस–पास भी ऐसी कई महिलाएं थीं जो अपने घर में जुल्म सह रहीं थीं परंतु आवाज नहीं उठा पा रहीं थीं। उसने सोचा क्यों न इन लोगों से खाना बनाने में मदद करने के लिए बात की जाए जिससे इनकी भी थोड़ी आमदनी हो जाएगी और ये भी अपने पैरों पर खड़ी हो जाएंगी तथा पैसों को लेकर प्रतिदिन मार–पीट नहीं होगी। उसने आस–पास के लोगों से बात कर के अपने अलावा 06 लोगों को इकट्ठा किया। उस समय उसके पास कुल 50 ग्राहक हो चुके थे जिनसे वह 3000/– प्रति माह की दर से पैसे लेती थी और उसमें से अपने सहकर्मियों को प्रति माह 3000/– रुपए देती थी और कुछ पैसों से राशन का सामान आ जाता था। उसके बाद उसके पास अच्छे–खासे पैसे बचने लगे। उसके द्वारा बनाए गए खाने की लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढ़ती गई। कभी–कभी छोटे–छोटे फंक्शन और पार्टियों के लिए भी खाने का ऑर्डर आ जाता। धीरे–धीरे ग्राहक भी बढ़ते गए। आदमनी अच्छी होने लगी। उसने अपना एक छोटा सा होटल भी खोल लिया जिसमें कुल 15 महिलाओं की एक टीम तैयार की, जिसमें से कुछ महिलाएं एक से बढ़कर एक भोजन तैयार कर सकती थीं, कुछ महिलाओं को साफ–सफाई, कुछ को मार्केटिंग डिपार्टमेंट, कुछ को सेल्स डिपार्टमेंट का जिम्मा सौंपा गया और एक महिला की आमदनी – खर्चे का ब्यौरा रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई। परंतु समस्या यह थी कि महिलाएं ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं थीं जिसके कारण पैसों के लेन–देन, रख–रखाव, आमदनी–खर्चे का ब्यौरा, कम्प्यूटर जनित बिल तैयार करना, बड़ी–बड़ी पार्टियों में लोगों से कैसे वार्तालाप करनी है, कैसे खाना परोसना है आदि में परेशानियां आती थी। अभी उन लोगों को बहुत कुछ सीखना बाकी था। ये सब परेशानियां शांति को भी समझ में आ रहीं थीं कि पढ़ी–लिखी न होने के कारण वह अपने व्यापार को अच्छे से बढ़ा नहीं पा रही है। कभी–कभी उसके बच्चे भी उसके बोलने की शैली को लेकर या कम पढ़ी–लिखी होने पर ऊँची आवाज में भला–बुरा बोल बैठते। शांति कक्षा 9वीं तक तो पढ़ी–लिखी थी लेकिन शादी हो जाने के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर पाई। उसने सोचा क्यों न मैं आगे की पढ़ाई जारी रखूं और 10वीं पास करके दिखाऊं और रोजमर्रा के कार्यों जैसे हिसाब–किताब करना, कम्प्यूटर चलाना, लोगों से सलीके से बात करना आदि आसानी से कर सकूं तथा अंग्रेजी भाषा का थोड़ा ज्ञान हो जाए ताकि कम्प्यूटर चलाने में और लोगों की बातों को समझने और समझाने में आसानी हो जाए। उसने रात 8 बजे की नाइट क्लास लेनी शुरू की और अपनी 10वीं की पढ़ाई का श्री गणेश किया। हालांकि ये उसके लिए इतना भी सरल नहीं था क्योंकि लोगों ने उसका खूब मजाक उड़ाया कि 35 की उम्र में पढ़ने चली है, 10वीं पास करने चली है, वगैरह–वगैरह। उसकी अपने बच्चों से भी बहस हो गई कि मेरे दोस्त क्या कहेंगे कि तुम्हारी मां इस उम्र में पढ़ने जाती है। लेकिन उसने अपने मन की आवाज सुनी और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दिया और उसने न सिर्फ पढ़ाई की बल्कि 10वीं पास करके भी दिखाया। लेकिन उसका उद्देश्य सिर्फ 10वीं पास करना ही नहीं था बल्कि वो चाहती थी कि वो शिक्षित होकर अपने जैसी और भी महिलाओं को शिक्षित करे जो गरीबी के कारण, कम उम्र में शादी हो जाने के कारण, बच्चों को जन्म देने के कारण पढ़ाई न कर सकीं, जो अपने ही घर में अनपढ़–जाहिल–गंवार जैसे शब्दों का कटु वचन सुनती आई हैं वो भी पढ़–लिख सकें, अपने पैरों पर खड़ी हो सकें, अपनी खुद की एक पहचान बना सकें। भले ही इसकी शुरूआत बहुत छोटे पैमाने पर हो परंतु परिणाम शानदार होना चाहिए। उसने धीरे–धीरे अपने यहां काम करने वाली सारी महिलाओं को पैसे का हिसाब–किताब

करना, भविष्य के लिए पैसे की बचत करना, लिखना–पढ़ना, कंप्यूटर चलाना जिसमें पुराने से पुराने डाटा को संग्रह करना, ये सब–कुछ करना सिखाया। भले ही ये सब सीखते–सिखाते दो साल बीत गए। इन दो सालों में आमदनी और बचत ज्यादा तो नहीं हुई क्योंकि खर्चे अधिक थे जैसे– स्वयं शांति की पढ़ाई और फिर अपने साथ कार्य करने वाली सहयोगियों को शिक्षित करना, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना, घरेलू हिंसा से महिलाओं को बचाना, अपना भला–बुरा समझने की क्षमता को विकसित करना, अपने परिवार की आर्थिक मदद करना, अपने छोटे बच्चों को पढ़ाना इत्यादि। इन सभी खूबियों को विकसित करने में वह अपने व्यापार पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाई। इसके बावजूद शांति के चेहरे पर एक नूर था कि उसने अपने साथ–साथ और भी कई महिलाओं में वो आत्मविश्वास पैदा किया जिससे वो अपना एक खुद का वजूद बना सकें। कोई उन्हें नीचा न दिखा सके, लोगों के सामने उन्हें अपना सिर शर्म से नीचा न करना पड़े। समय बीतता गया। शांति अपने छोटे से होटल पर पुनः ध्यान देने लगी और उसके होटल में बने व्यंजनों की लोकप्रियता बढ़ती गई। अब तो आलम ये था कि अगर कोई उस शहर में आए और उसके होटल के व्यंजनों का स्वाद न ले, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। उसके पास ग्राहकों की लाइन लगी रहती थी और टिफिन सर्विस के लिए भी ग्राहक काफी हो गए थे अब यह 15 कर्मचारियों के वश की बात नहीं थी। धीरे–धीरे उसने अपना दायरा बढ़ाया और एक दूसरा रेस्टोरेंट भी खोला और अपने साथ ऐसी 30 महिलाओं की टीम तैयार की, जो घरेलू हिंसा की शिकार थीं। इनमें से कुछ आत्महत्या कर लेना ही बेहतर उपाय समझती थीं और कुछ समाज के दबाव में घुट–घुट कर जी रहीं थीं और आज का समय है कि वे सभी आत्मविश्वास और अपने एक स्वतंत्र वजूद के साथ खुशी–खुशी जीवन व्यतीत कर रहीं हैं।

सिर्फ एक महिला के सशक्त होने से राष्ट्र का विकास संभव नहीं, जब वही महिला अपने साथ–साथ और भी महिलाओं को सशक्त करती है, कई लोगों के लिए प्रेरणा बनती है, और जब सारी महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मरक्षा और अपना एक वजूद पैदा करने का जुनून आ जाता है, तभी सही मायनों में हमारे राष्ट्र का विकास संभव होता है।

सतर्कता एवं जागरूकता

स्वर्णलता गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम), मध्य प्रदेश, ग्वालियर

ये संकल्प हमारा है, भ्रष्टाचार मिटाना है।

जागरूक नागरिक बन कर, इसका अंत कराना है।।

बच्चे हैं कर्णधार देश के, इनका भविष्य बनाना है।

जागरूक सबको बनाकर, उनको ये समझाना है।।

रिश्वत लेना/देना, कालाबाजारी और भाई–भतीजा व्यवहार।

बेईमानी और यौन–उत्पीड़न, हैं कदाचार और भ्रष्टाचार।।

भ्रष्टाचार है घातक बीमारी, इससे देश बचाना है।

योग्यता को आगे बढ़ाकर, अयोग्य सब हटाना है।

हम सब की है यही पुकार, बंद करो ये भ्रष्टाचार।

जब शिक्षित होंगे सब नर–नार, मिट जायेगा भ्रष्टाचार।।

अपने अधिकारों को जानो और पहचानो, यही जागरूकता है।

सही गलत में फर्क करो, बस यही सतर्कता है।।

पारदर्शिता पर आधारित नीति–नियम बनाना है।

सदाचार और नैतिकता से, भारत को विश्वगुरू बनाना है।।

यात्रा के साथ सीखना

शैलेन्द्र सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (भूगोल)
जवाहर नवोदय विद्यालय पिछोर, डबरा, ग्वालियर

शरदकालीन अवकाश के लिए जब मैं अपने कार्यस्थल जवाहर नवोदय विद्यालय पिछोर (डबरा), ग्वालियर से अपने गृह जनपद इटावा के लिए निकला तो मेरे मन में बहुत से विचार उमड़–घुमड़ रहे थे। त्यौहार पर घर जाने की खुशी, रास्ते भर अपने पसंद के गाने गुनगुनाते हुए, पत्नी व बेटे धर्म के साथ खुशी के पल बिताना, लेकिन इस बार एक नया विचार यह आया कि क्यों न इस यात्रा को यादगार बनाते हुए एक यात्रा वृतांत लिखा जाए। चूंकि मैं भूगोल विषय का शिक्षक हूं और आसपास के जो भी भू–दृश्य हैं वे कहीं न कहीं विषय से संबंधित होते हैं चाहे वो बस्ती विन्यास हो, परिवहन के प्रकार हों, कृषि पैटर्न हो या फिर भौगोलिक आकृतियां ये सभी हमें अपने विषय की समझ के साथ सामाजिक ताने–बाने को समझने में भी मदद करते हैं, यूं तो मैं कई बार इस रास्ते से आया–गया हूं लेकिन सोचा कि इस बार इसे यादगार बनाया जाए।

विद्यालय से निकलकर पिछोर तिराहे से 25–26 किलोमीटर का रास्ता गिजुर्रा तक जाता है गिजुर्रा तिराहे से बाएं हाथ मुड़कर 10 किलोमीटर का एक घना जंगल क्षेत्र है जिसे सिंहपुर का जंगल कहते हैं। सुनसान घने जंगल के बीच में सिंहपुर नाम का एक गांव है जहां बमुश्किल 10 से 15 घर होंगे। इस रास्ते पर आते–जाते मैंने कई बार कुछ जंगली जानवर जैसे सियार, लोमड़ी और लकड़बग्घे आदि को भी देखा है, इसलिए मैं इस रास्ते पर रात के समय चलने से बचता हूं। गिजुर्रा से सिंहपुर का यह मार्ग आगे बेहट–ग्वालियर मार्ग को जोड़ता है।

सिंहपुर के जंगल को मैंने एक विभाजक के रूप में पाया जहां पर कृषि विन्यास में अंतर देखने को मिलता है। पिछोर की तरफ धान, तिली आदि फसल की प्रमुखता है वहीं बेहट की तरफ बाजरा और ज्वार आदि की प्रमुखता है। अभी खरीफ की फसल की कटाई का समय है पर बहुत से खेत फसल कटने के बाद रवि की फसल के लिए तैयार है। संभवतः इस क्षेत्र में किसान रबी के मौसम में सरसों को अधिक बोते हैं।

मौह–ग्वालियर मार्ग पर बेहट कस्बा संगीत सम्राट तानसेन की जन्मभूमि व तपोभूमि है। तानसेन मुगल बादशाह अकबर के नव–रत्नों में प्रमुख थे। हस्तिनापुर, बेहट, मौह और मेहगांव जैसे छोटे कस्बे अधिवास के रेखीय विन्यास को प्रदर्शित करते हैं जो सड़कों और राजमार्गों आदि के किनारे विकसित और विस्तारित हो रहे हैं।

मौह–मेहगांव, मध्य प्रदेश राजमार्ग संख्या 19 के रास्ते पर लगभग 10 से 15 किलोमीटर के आसपास दंदरौआ ग्राम है जहां पर नृत्य की मुद्रा में हनुमान जी का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है उन्हें 'डॉक्टर हनुमान' के नाम से भी जाना जाता है। मैं अक्सर यहां दर्शन करते हुए आता–जाता हूं, मंदिर का गर्भ गृह दिन में 12 बजे से 2 बजे तक बंद रहता है। आज मैं थोड़ा लेट हो गया तो दर्शन तो नहीं हो पाए लेकिन मंदिर में प्रणाम करते हुए आगे बढ़ गया। आगे बढ़ते हुए मेहगांव से ग्वालियर, भिण्ड, इटावा राष्ट्रीय राजमार्ग 719 पर आ जाता हूं और भिण्ड होते हुए इटावा के लिए आगे बढ़ जाता हूं। भिण्ड–फूफ–इटावा मार्ग पर स्थानीय महत्व के कई जैन मंदिरों को देखा जा सकता है।

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित चंबल नदी दोनों राज्यों की भौगोलिक सीमा का निर्धारण करती है जो आगे यमुना नदी में क्वारी, सिंध, पहुंच नदियों के साथ विश्व का अनोखा पांच नदियों का संगम पंचनदा बनाती है। चम्बल और यमुना का दोआब क्षेत्र विश्व प्रसिद्ध उत्खात भूमि (RIVINES) या बीहड़ के नाम से विख्यात हैं। चंबल नदी पर डॉल्फिन और घड़ियाल सेंक्चुअरी भी बनाई गई है।

चंबल नदी को पार करके एक छोटा सा कस्बा पड़ता है– उदी मोड़, जहां पर आप गरमागरम मंगोड़े (मूंग दाल के पकोड़े) खाने का आनंद ले सकते हैं। यमुना नदी को पार करते हुए जब हम इटावा में प्रवेश करते हैं तो सबसे पहले कालीवाह माता का मंदिर पड़ता है जो बहुत प्रसिद्ध है, उसके बाद सुमेर सिंह का किला और लायन सफारी भी देख सकते हैं।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो भूगोल पढ़ने वाले छात्रों के लिए बहुत कुछ सीखने और समझने के लिए दृश्य हमारे आस–पास ही मिल जाते हैं। इसलिए आप भी जब कहीं यात्रा करें तो वहां के भू–दृश्य से कृषि विन्यास, अधिवास विन्यास, परिवहन विन्यास आदि को देख और समझ सकते हैं। भूगोल पृथ्वी की सतह का अध्ययन है जो हमारे आसपास के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन को दर्शाता व सिखाता है।

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

किमी चौहान
कक्षा – ग्यारहवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

सावित्रीबाई फुले शिक्षित नहीं थीं क्योंकि वे पिछड़े समाज माली में पैदा हुई थी और वह भी महिला के रूप में। सावित्रीबाई फुले और उनके पति ज्योतिबा फुले को ब्राह्मणों ने शिक्षित होने के योग्य नहीं माना था इसलिए समाज में भी उनकी शिक्षा मना थी।

9 साल की उम्र में सावित्रीबाई की शादी ज्योतिबा फुले के साथ हुई। उस समय वह स्वयं 13 वर्ष के थे। ज्योतिबा फुले उनके जीवन में शिक्षक बनकर आए थे। पढ़ने लिखने का प्रशिक्षण उन्हें ज्योतिबा फुले से मिला। अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद सावित्रीबाई ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में दाखिला लेकर उसे पूरा किया। अपनी शिक्षक की ट्रेनिंग पूरी करने के बाद उन्होंने सगुना बाई के साथ मिलकर पुणे महाबाड़ा में लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया। सगुना बाई स्वयं एक क्रांतिकारी नारीवादी होने के साथ–साथ ज्योतिबा की गुरु भी थी। कुछ समय बाद सवित्रीबाई और ज्योतिबा फुले ने सगुनाबाई के साथ मिलकर भिड़ेवाला में अपना स्कूल शुरू किया। भिड़ेवाला के स्कूल में लड़कियां विज्ञान और गणित भी पढ़ती थीं जो उस समय के लिए लगभग असंभव सी बात थी।

उनके शिक्षक बनने पर समाज में विरोध हुआ। उन्हें धर्म को डुबाने वाली कहा गया। जब पढ़ाने निकलतीं तो लोग उन पर गंदगी, कीचड़ और गोबर फेंकते। अपवित्र माने जाने वाले कीचड़ उछालने के तर्क पर सावित्रीबाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुंच कर गंदी कर दी गई साड़ी बदल लेती थीं।

1 जनवरी 1848 में सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के सहयोग से पुणे में बालिकाओं के लिए पहला बालिका विद्यालय खोला। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। यह वह दौर था जब 12–13 वर्ष की उम्र में लड़कियों की शादी उम्र दराज पुरूषों से कर दी जाती थी इसलिए कई बालिकाएं किशोरावस्था में ही विधवा हो जाती थीं। इस समस्या को दूर करने के लिए उस दंपति ने विधवाओं के लिए एक आश्रय गृह खोला। महिला सेवा मंडल के रूप में पुणे की विधवा स्त्रियों के आर्थिक विकास के लिए देश का पहला महिला संगठन भी गठित किया। तत्कालीन समाज में व्याप्त तमाम स्त्री विरोधी रूढ़ियों, आडंबरों तथा अंधविश्वासों के खिलाफ सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले मजबूती से डटकर खड़े रहे और एक बेहतर भारत के निर्माण में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

प्लेग महामारी के फैलने पर सावित्रीबाई प्लेग के मरीजों की सेवा करती रहीं और प्लेग से पीड़ित बच्चों की सेवा करने के कारण ही उन्हें भी प्लेग हो गया था और सेवा में कार्यरत रहने के दौरान ही 10 मार्च 1897 को सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया।

क्रियाशील रहूंगा

मनजीत कुमार सिंह
स्टेशन शिक्षा अनुभाग, वायुसेना स्टेशन,
महाराजपुरा, ग्वालियर

न शांत रहूंगा, न अशांत रहूंगा,
जब तक है रुधिर का कतरा,
तब तक सहूंगा, लड़ता रहूंगा।

मेरा साथ दो, मत मात दो,
मैं नहीं कहूंगा, तुझसे भी लडूंगा
पर्वत को राई, राई से पर्वत बनाऊंगा।

तू ईश्वर है तो अपने घर का,
मुझे नहीं हैं डर किसी बात का,
खुद से लडूंगा, मात दूंगा।

तेरी शरण में मूर्ख आते हैं
जो आत्मबल गवां दिए होते हैं
मैं शरण दूंगा, मैं तो करम दूंगा।

मैं शक्ति नहीं मागूंगा,
इसे पैदा करूंगा, निज भुज से,
जो करना पड़े, सो करूंगा।

मैं नित्य क्रियाशील रहूंगा,
मैं लड़ता रहूंगा, चलता रहूंगा,
जब तक है सांस, तब तक कहूंगा,
मैं नित्य क्रियाशील रहूंगा।

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

चंचल आर्य
कक्षा – ग्यारहवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

भारत में महिलाओं की स्थिति में पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलाव देखे गए हैं। 1730 ई. के आसपास तंजौर के एक अधिकारी त्र्यंम्बक यज्वन का स्त्री–धर्म–पद्धति इसका एक महत्वपूर्ण अपवाद है। इस पुस्तक में प्राचीन काल के अपस्तंभ सूत्र के काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को शामिल किया गया है।

प्राचीन भारत–

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेदिक ऋचाएं यह बताती हैं कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र में होती थी और उन्हें अपना पति चुनने की अनुमति थी। प्राचीन भारत के कुछ साम्राज्यों में नगरवधू जैसी परंपराएं मौजूद थीं। इसका उदाहरण आम्रपाली थी। हालांकि बाद में लगभग 500 ईसा पूर्व में स्मृतियां विशेषकर मनुस्मृति के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गई और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमणों और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

मध्ययुगीन भारत–

स्त्रियों की शिक्षा एवं आर्थिक स्थिति में उस समय गिरावट आई जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गई थी। भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियां या मंदिर की महिलाओं को यौन शोषण का शिकार होना पड़ा था। इन परिस्थितियों के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में सफलता पाई।

जब मैंने भाला उछाला

मनजीत कुमार सिंह
स्टेशन शिक्षा अनुभाग, वायुसेना स्टेशन,
महाराजपुरा, ग्वालियर

भटकता रहा मैं रातों के साये में, एक साथ के लिए।
वो हुआ कभी न मेरा, हमने ख्वाब उधार लिए थे।।

करुं क्या दीदार उस रोशनी का, जो ठहरी कभी नहीं।
वो चांदनी सा था, उसके लिये तो चांद भी जमीं पर उतार दिए थे।।

उनकी पसंद को, अपनी पसंद बनाया हमने यूं ही।
मेरी हरकतें जब फुर्कत हुई, उन्हें सहा न गया, खुद को जो इतना सवांर लिए थे।

किसके साथ हुआ क्या ? कब, कहां और कैसे ?
हम खबर उनको सुना रहे थे, जो खुद हाथों में अखबार लिए थे।

जब कोई निहत्थे, चढ़ जाये जब हत्थे तो क्या करें।
वो तो डर से ही मरे जा रहे थे, जो हाथों में हथियार लिए थे।।

बदलते हैं हालात, किसी के हालत बदलने से।
जिंदा रहा हूं जमाने के जख्म खाके, खुद को जो आज तक उपचार किए थे।

भरोसा टूटकर जुड़ता होगा बेशक! पर सीलन से दरारें पड़ जाती हैं।
उन्हें लगा कि हम लूट लिए गए, पर कुछ बचाकर ऐतबार किए थे।।

कुछ न रहा, सब कुछ रूठा, एक कतरा तक न छूटा।
पर बाकी रही मुझमें उम्मीद की सांसें, जिसमें जीने का जुगाड़ किए थे।

जब भाला हमने उछाला तब सफलता चमकती दिखी सबको।
पर किसको पता, रातों की गाथा, कि कोशिश हमने कितनी बार किए थे।

भारत के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

निशा जाटव
कक्षा – ग्यारहवीं "ब"
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

राष्ट्र तभी सशक्त बन सकता है जब उसका प्रत्येक नागरिक सशक्त हो। इसमें भी महिलाओं की भूमिका सबसे आगे है। परिवार में एक मां के रूप में वह अपनी यह भूमिका अदा करती है। राष्ट्र निर्माण में उसके इस योगदान का लंबा इतिहास रहा है। विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था।

पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेदिक ऋचाएं यह बताती हैं कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र में होती थी और संभवतः उन्हें अपना पति चुनने की आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथ कई महिला साथियों और संतों के बारे में बताते हैं जिनमें गार्गी और मैत्रेयी के नाम उल्लेखनीय हैं। मध्ययुगीन काल में समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में उस समय और अधिक गिरावट आई, जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गई। परंतु स्वतंत्रता के बाद से ही महिलाओं का विकास हमारी आयोजना का केंद्रीय विषय रहा है, पिछले 20 वर्षों में महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु कई नीतिगत बदलाव किए गए।

कलम (लेखनी)

श्रीमती उमा उपाध्याय
पुस्तकालयाध्यक्ष
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3, मुरार कैंट

हर कदम पे रोशनी का,
हौसला तूने दिया।

जुर्म की जंजीर को,
हरदम तूने आहत किया।

खो गयी ताकत क्या तेरी,
या भरोसा खुद नहीं।

जुर्म के बाजार में,
खामोश क्यूं रहने लगी।

कह तो कुछ अपनी जुबां से
मूक होती लेखनी ...

उलझनों की राह में,
एक फर्ज की तू आस थी।

दिल तलक जाने की,
एक आवाज तेरे पास थी।

मिट गयी हस्ती क्या तेरी,
जोश अब वो है नहीं।

भ्रष्टता के शोर से,
आवाज क्या दबने लगी।

कह तो कुछ अपनी जुबां से
मूक होती लेखनी...

लिख रहा है युग सदी से,
प्रेरणा के मूक स्वर।
आज स्थितप्रज्ञ सा,
क्यूं बन गया तेरा सफर ?

बोलना होगा उसे,
हर शख्स की फरियाद पर।

वरना इक दिन सच में तू,
मौन कर दी जाएगी।

वक्त है कह दे जुबां से
मूक होती लेखनी...

है अगर तो खो गयी है,
चेतना की राह क्यूं ?
है अगर तो वक्त का,
बदला हुआ है रूप क्यूं ?
फिर क्यूं लिखू ? किसके लिये
सदियां बदल न पायीं जो।

नीली स्याही की ये रंगत,
लाल क्यूं होने लगी।

कह तो कुछ अपनी जुबां से
मूक होती लेखनी...
कह तो कुछ अपनी जुबां से
मेरी तू खामोश कलम।।

भारतीय राजभाषा

गौरव कुमार तिवारी
हव./जी.डी.
पुलिस महानिरीक्षक, केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु.बल, ग्वालियर

संसार में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में मैंडेरिन चीनी, अंग्रेजी और स्पैनिश के बाद चौथे स्थान पर हिंदी अपना स्थान सुनिश्चित करती है परंतु दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा के रूप में देखा जाये तो पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में अंग्रेजी के बाद हिंदी का ही नाम आता है। भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है और इसे संविधान सभा द्वारा राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को दिया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

वैसे तो भारत देश में बहुत सी भाषाएं बोली जाती हैं परन्तु हिंदी भाषा का अपना ही एक महत्व है जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है क्योंकि पूर्व में काफी लंबे समय से हिंदी भाषा का उपयोग होता आ रहा है। भक्तिकाल में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक चारों दिशाओं में अनेक संतों द्वारा हिंदी भाषा में ही रचनाएं की गयी हैं। स्वतंत्रता संग्राम के राजनेताओं जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, सुब्रह्मण्य भारती आदि द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का सपना देखा गया था। अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाने के कारण हिंदी को महात्मा गांधी ने सन् 1917 में गुजरात के सम्मेलन में राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने पर जोर दिया था।

राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा :–

समाज में जिस भाषा का प्रयोग करके बहुत सारे लोग अपने विचार प्रकट करते हैं और उस भाषा का प्रभाव और अधिक विस्तृत होकर पूरे राष्ट्र में फैल जाता है तब वह भाषा 'राष्ट्रभाषा' कहलाती है अर्थात् राष्ट्रीय भाषा का अर्थ उस भाषा से है जिस भाषा का उपयोग करके जन सामान्य द्वारा विचारों का आदान प्रदान किया जाता है। जिस भाषा का प्रयोग राजकीय कार्यों में किया जाता है उस भाषा को 'राजभाषा' कहा जाता है। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी द्वारा परिभाषित 'राजभाषा' की परिभाषा इस प्रकार है– जिस भाषा का प्रयोग केंद्रीय और प्रादेशिक सरकार द्वारा पत्र–व्यवहार, राजकाज और सरकारी लिखा–पढ़ी में किया जाए, उसे राजभाषा कहा जाता है।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी :–

हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी में होते रहे हों परंतु सम्पूर्ण राष्ट्र में आपसी संपर्क, संवाद–संचार, विचार–विमर्श, जीवन–व्यवहार का माध्यम हिंदी ही रही है। हर जगह हिंदी ही जनता के विचार–विनिमय का साधन रही है, चाहे वो पत्रकारिता का क्षेत्र हो अथवा स्वाधीनता संग्राम का।

अतीत के महापुरुषों भारतेन्दु हरिश्चंद्र, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही सम्पूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क स्थापित किया और सफलता हासिल की। इसी के कारण आजादी के पश्चात्

संविधान–सभा द्वारा बहुमत से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने का निर्णय लिया गया था। जैसे–जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है वो भाषा उतने ही अलग–अलग रूप में विकसित होना शुरू हो जाती है, यही हाल हिंदी भाषा के साथ हुआ क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित थी। कालांतर में साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसका विकास हुआ, फिर समाचार–पत्रों में 'पत्रकारिता हिंदी' का विकास हुआ एवं 'खेलकूद की हिंदी', 'बाजार की हिंदी' भी सामने आई।

अतः अपने लगातार विकास के कारण स्वतंत्रता के बाद हिंदी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और एक राजभाषा का रूप विकसित हो गया। राजभाषा भाषा के उस रूप को कहा जाता है जो राजकाज में प्रयुक्त की जाती है। स्वतंत्रता के बाद राजभाषा आयोग द्वारा यह निर्णय लिया गया कि हिंदी को भारत की राजभाषा बनाया जाए। इस निर्णय के बाद ही संविधान ने इसे राजभाषा घोषित किया था। प्रादेशिक प्रशासन में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। दिल्ली में भी इसका प्रयोग हो रहा है और केंद्रीय सरकार भी अपने अनेक कार्यों में इसके प्रयोग को बढ़ावा दे रही है।

राजभाषा हिंदी की विशेषताएं :–

राजभाषा हिंदी की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

- अन्य भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में भी समाहित हैं।
- इस भाषा को समझना और सीखना आसान है।
- इस भाषा को अल्प काल में ही लिखना–पढ़ना सीखा जा सकता है।
- इस भाषा को जैसा लिखा जाता है, वैसा ही पढ़ा जाता है, यही इसकी मुख्य विशेषता है।
- इस भाषा को संस्कृत भाषा की बेटी कहा जाता है।
- इसके साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विशाल है।

उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए संघर्ष व इतिहास :–

हिंदी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी जी और अन्य महापुरुषों द्वारा कई आंदोलन किए गए। सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक पहला प्रयास किया गया, इन्होंने ही हिंदी को जनमानस की भाषा भी बताया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1949 में काफी विचार–विमर्श के बाद 14 सितंबर 1949 को हिंदी को 'राजभाषा' का दर्जा प्रदान किया गया। उसके बाद 26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ, संविधान में इस भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया और इसे भारतीय संविधान के भाग 17वें अध्याय की धारा 343 (1) में निहित किया गया है और बताया गया है कि राष्ट्र की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।

14 सितंबर हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के कारण इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया

जाता है। परंतु हिंदी को राजभाषा के रूप में चुने जाने के कारण गैर हिंदी भाषी राज्य खासकर दक्षिण भारत के लोगों ने इसका विरोध किया। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए कार्य :–

हिंदी भाषा का विकास और प्रसार करने के उद्देश्य से संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ के कर्तव्य के रूप में राज्यों को यह निर्देश दिए गये हैं कि वे, हिंदी भाषा को भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाएं और उसका विकास करें। इसके प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिसमें हिंदी में निबंध लेखन, वाद–विवाद, हिंदी टंकण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सरकार द्वारा भी बड़े पैमाने पर हिंदी दिवस से संबंधित आयोजन किये जाते हैं और इन आयोजनों पर अच्छी–खासी रकम भी खर्च की जाती है। सामान्यतः हर सरकारी, अर्ध–सरकारी संस्थान हिंदी दिवस पर कोई न कोई आयोजन करते हैं। इस अवसर पर कई पुरस्कार भी वितरित किए जाते हैं।

हिंदी भाषा की अजीब विडंबना :–

वैसे तो भारत में हिंदी, देश की राजभाषा के रूप में बोली जाती है तथापि राजभाषा होने के बावजूद भी हिंदी बोलने–लिखने वालों को एक अलग ही दृष्टि से देखा जाता है जिसके कारण हिंदी बोलने वाला व्यक्ति स्वयं को हीन समझता है।

शैक्षणिक संस्थानों में भी प्रवेश के समय अंग्रेजी भाषा का बोल–बाला देखने को मिलता है चाहे वो प्रवेश पाने के लिए हो या फिर किसी नौकरी के लिए। फिल्मों में काम करने वाले कलाकार जब कभी फिल्म के बारे में या अपने बारे में कोई इंटरव्यू देते हैं तो उनकी भाषा आमतौर पर अंग्रेजी ही होती है। सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होने के बावजूद, हिंदी को आज भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं है, जबकि इससे कहीं कम बोली जाने वाली अरबी और फ्रेंच भाषाओं को यह सम्मान हासिल है। ऐसा क्यों ? शायद हमने ही हिंदी को वह सम्मान और स्थान नहीं दिया जो उसे मिलना चाहिए तो फिर दूसरों से कैसे उसकी उम्मीद रखें। यदि हम चाहते हैं कि हिंदी भाषा का सम्मान और स्थान बना रहे तो हमें अंग्रेजी की तरफ ज्यादा आकर्षित न होकर हिंदी को ही बेहतर सम्मान दिलवाने का प्रयास करना चाहिए, तभी आने वाले समय में हम हिंदी भाषा को राजभाषा का जो दर्जा प्राप्त है उसे निरंतर रख पाएंगे।

निष्कर्ष :–

राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी हिंदी भाषा लोगों के बीच से कहीं–न–कहीं गायब होती जा रही है और अंग्रेजी ने अपना प्रभुत्व जमा लिया है। यदि स्थिति इसी प्रकार रही तो वो दिन ज्यादा दूर नहीं, जब हिंदी भाषा (राजभाषा) हमारे बीच से ओझल हो जाएगी। यदि हम सच में चाहते हैं कि हिंदी भाषा का प्रभुत्व राजभाषा के रूप में बना रहे तो हमें उसके प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना होगा। सरकारी कामकाज में हिंदी को प्राथमिकता देनी होगी तभी हिंदी भाषा को जिंदा रखा जा सकता है और इसका प्रभुत्व कायम रखा जा सकता है।

दिवास्वप्न

शैलेन्द्र सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (भूगोल)
जवाहर नवोदय विद्यालय, पिछोर, डबरा, ग्वालियर

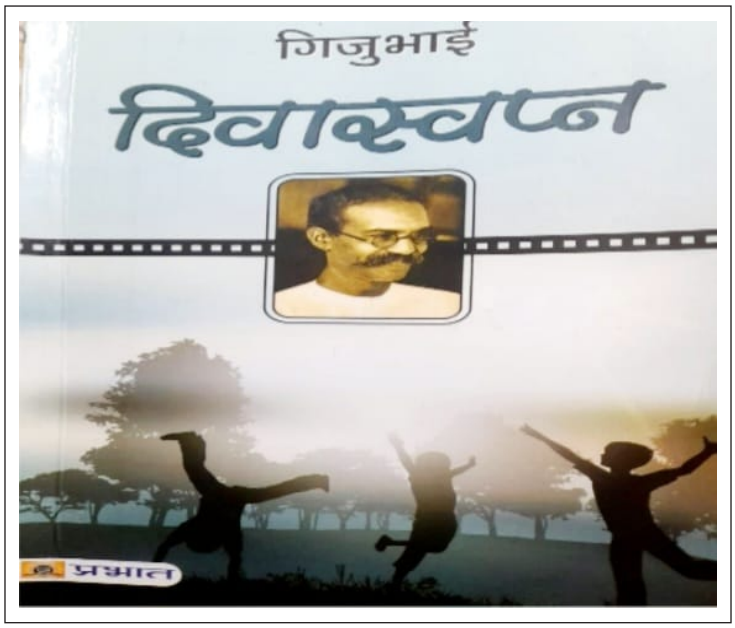

समीक्षा : किताब पढ़ना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एकाग्रता, स्मृति और संचार कौशल को बेहतर बनाता है। पुस्तक पढ़ने से तनाव कम होता है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। पढ़ना एक नई काल्पनिक दुनिया के द्वार खोलता है, मनोरंजन करता है, सकारात्मक मानसिक और मनोवैज्ञानिक लाभ देता है। ऐसी ही एक पुस्तक है – दिवास्वप्न। यह पुस्तक गुजराती भाषा के महान लेखक और शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका के द्वारा लिखी गयी है। पुस्तक में लक्ष्मीशंकर नामक एक लेखक व शिक्षक प्रमुख पात्र की भूमिका में है जो अपने शैक्षणिक अनुप्रयोगों के द्वारा पठन–पाठन की पद्धति में परिवर्तन करना चाहता है। लक्ष्मीशंकर शिक्षा के उच्च अधिकारी के समक्ष अपने कार्यक्रम और प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत करके एक सत्र के लिए कक्षा 4 के छात्रों के साथ अपने अनुप्रयोगों को करने की अनुमति प्राप्त कर लेता है। पुस्तक चार खंडों में विभाजित है जिनमें लेखक के अनुप्रयोगों का प्रारंभ, प्रगति, छमाही परिणाम और अंतिम सम्मेलन शामिल है। लेखक के प्रयोगों की शुरूआत अपेक्षानुसार नहीं होती है और लेखक कहता है कि जितनी अधिक हमारी कल्पना, ज्ञान और आदर्श होते हैं, उतनी ही गंभीर और बड़ी हमारी परेशानी होती है। लेखक अपनी रणनीति के अनुसार छात्रों को कहानी सुनाकर एकाग्रता और अनुशासन का पाठ सिखाता है। धीरे – धीरे

छात्रों को खेल और खिलौना आधारित पद्धति से आस–पास के वातावरण से छात्रों को प्रायोगिक अध्ययन करवाता है। छात्रों के अंदर धीरे–धीरे स्वच्छता, साफ–सफाई और अनुशासन के प्रति सकारात्मक परिवर्तन आता है। शिक्षक छात्रों को कहानी, खेल–खिलौना, अंताक्षरी, यात्रा–भ्रमण और अभिनय के द्वारा हिंदी, गणित, व्याकरण, भूगोल, इतिहास आदि विषयों का ज्ञान करवाता है। प्रारंभ में कठिन दिखने वाले कार्य के लिए साथी शिक्षकों के द्वारा लेखक का उपहास किया जाता है लेकिन लेखक की सफलता से साथी शिक्षकों में भी उसकी पद्धति की सराहना की जाती है। लेखक, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर उनके लिए कार्यक्षेत्र के चयन और प्रोत्साहन पर बल देता है। अंत में लेखक अपने प्रयासों और छात्रों के सहयोग से अपने उद्देश्यों में सफल रहता है।

पुस्तक की कहानी से कालखंड का स्पष्ट पता नहीं लगता है परंतु कथावस्तु और पात्रों से कहानी औपनिवेशिक काल की लगती है। दिवास्वप्न पुस्तक वर्तमान शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों को समझने और सीखने का उचित माध्यम और उदाहरण है। पुस्तक बहुत ही सरल और रूचिकर है जिसमें मात्र् 120 पेज हैं जिन्हें पाठक सिर्फ एक या दो दिन में ही पढ़ सकता है। दिवास्वप्न पुस्तक बाल–मनोविज्ञान और शैक्षिक विचारों को कथा शैली में प्रस्तुत करने वाले लेखक गिजुभाई के अध्यापकीय जीवन के अनुभव का सार है। शिक्षण कार्य कर रहे शिक्षकों के साथ अभिभावकों व छात्रों को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए।

उनकी लत की बीमारी

रूपेश कुमार महतो
एस.आई. / एम.
पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र, सी.आर.पी.एफ,
नया गांव, पनिहार, ग्वालियर

उनकी लत की बीमारी मुझे ऐसी लगी,
जो किसी टेस्ट या रिपोर्ट में न आई,

और डॉक्टर साहब कहते हैं कि यह प्यार की बीमारी है साहब,
जो आंखों के रास्ते दिल तक जा पहुंची है।

भाग रहा पूरा संसार

हम भी भागे, तुम भी भागे,
भागे है पूरा संसार।

कभी हम आगे, कभी वो आगे,
कभी आगे है पूरा संसार।

आपाधापी की इस भगदड़ में,
भाग रहा पूरा संसार।

हम खो गए, सब खो गए,
मोह–माया के जंजाल में।

न तुम निकले, न मैं निकला,
दुनिया के इस मायाजाल से।

और अंत समय तक,
न तुम जाने, न मैं जाना,
हैं कितने दिन और मेहमान यहां के।

चिंतन

डॉ. ब्रजेश कुमार पाण्डेय
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय, सी.आर.पी.एफ., नयागांव, ग्वालियर

ये प्रश्न घूमता बार–बार,
जीवन का क्या है सत्य सार
आखिर दुनिया में क्यों आए ?
क्या लक्ष्य रहा इस जीवन का
जो इस भवसागर में डूबे उतराए।

पर जब देखा अंतर्मन को
एक नई दिशा थी चिंतन को,
जब भोले बालक की आंखों में
प्यार चमकता दिखता है,
ईश्वर की इस वृहद सृष्टि को
सौ बार नमन मन करता है।

जब प्रकृति अपने अल्हड़ स्वरूप में
जी भर रंगरलियां करती है,
परमेश्वर की अप्रतिम रचना
मन को आनंदित करती है।

जब सागर की अनंत लहरें
आकर तट पर खो जाती हैं,
सृष्टिकर्ता के साक्षात् रूप का
मन को आभास कराती हैं।

रजनी के जगमग आंचल में
जब चांदी की छटा बिखरती है,
अंधकार में सोई धरती की
शोभा और निखरती है।

जब अरूण देव का रथ आकर
ईश्वर का शौर्य सुनाता है,
सारी पृथ्वी, सारी सृष्टि में
जीवन का राग भर जाता है।

उस परमपिता परमेश्वर ने
अपनी सत्ता का दिव्य दृश्य
ही दिखलाने हमको बुलवाया,
कुछ भेद खोलकर जीवन के
इस जगत चक्र को दोहराया।

हम वशीभूत उस स्वामी के
जो कण–कण क्षण–क्षण का प्रहरी है,
मन जीवन अर्पण उसको
श्रद्धा जलनिधि से गहरी है।

प्रति पल, प्रति क्षण इस जीवन का
व्यर्थ न हो ये यत्न करें,
हो निर्मल पावन निश्छल मन
आओ हम सब संकल्प करें।

आत्मविश्वास में छिपा सफलता का रहस्य

अमर पाल सिंह
तकनीकी अधिकारी 'बी'
रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर

''सफलता का रहस्य आत्मविश्वास में छिपा होता है जो आपके अंदर होता है।''

– विलियम जेम्स

मानव सभ्यता के शुरुआत से ही मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से, उसके लोगों से जुड़ कर रहना चाहता है। प्रकृति ने सिर्फ मनुष्य को सोचने और समझने की शक्ति दी है जो उसे इस काबिल बनाती है कि वो हर असंभव कार्य को भी संभव बना डाले। परंतु यह तभी संभव है, जब वह अपने अंदर छिपी प्रतिभा को पहचान कर अपने आत्मविश्वास से उस कार्य को करें।

आत्मविश्वास एक ऐसा गुण है जो मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक जादू जैसा होता है, जो हमारे जीवन को सफल बनाने में मदद करता है। आत्मविश्वास का यह जादू हमारे कौशल और साहस में विश्वास करने की क्षमता प्रदान करता है। हम सभी के आदर्श स्वामी विवेकानंद जी ने भी कहा है कि जब तक आप स्वयं में विश्वास नहीं करेंगे, तब तक ईश्वर में विश्वास नहीं कर पाएंगे। जब हमें यह प्रतीत होने लगे कि हम जो कर रहे हैं वह महत्वपूर्ण है और हम अपने आप में विश्वास करते हैं तो हमें एक आंतरिक शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा मनोबल हमारे आत्म–विश्वास को प्रोत्साहित करता है और यही

आत्म–विश्वास हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु महत्वपूर्ण तत्व होता है फिर चाहे वे आध्यात्मिक लक्ष्य हों या भौतिक।

आत्मविश्वास में एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति होती है जिसके कारण ही बड़े– बड़े लक्ष्यों के संपादन करने में सफलता मिलती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से भरा हुआ है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिंता नहीं रहती। क्षमता, ज्ञान व कौशल किसी भी व्यक्ति में साहस व आत्मविश्वास भर सकते हैं, जिसके सहारे व्यक्ति जोखिम उठाकर भी जीवन की ऊंचाइयों को छू सकता है। स्वयं का महत्व नहीं समझने वाला व्यक्ति अपने फैसले खुद नहीं ले पाता और हमेशा अनिश्चय के साथ–साथ अनिर्णय की स्थिति में भी बना रहता है। ऐसी स्थिति में उसकी आत्म निर्भरता भी खो जाती है, जिससे लोगों के बीच बना–बनाया भरोसा भी चला जाता है। साथ ही स्वयं का महत्व नहीं समझने वाले लोग कभी–कभार अवसाद के शिकार भी हो जाते हैं। ऐसे लोगों को सबसे पहले अपने प्रति नकारात्मक विचारों को त्याग कर सकारात्मकता की ओर अग्रसर होना चाहिए।

सामान्यतः मनुष्य की शक्ति को तीन भागों शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति में विभाजित करके देखा जाता है। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो इस दुनिया के सभी लोगों की शारीरिक शक्ति में थोड़े–बहुत का ही अंतर होता है। लेकिन सभी की मानसिक शक्ति में काफी अंतर होता है। जब शरीर थक जाता है, तब वह मन की शक्ति से पुनः खड़ा हो जाता है। जब हम इतिहास के महान लोगों के बारे में पढ़ते हैं तो आश्चर्य होता है कि इन व्यक्तियों में ऐसी कौन सी असाधारण शक्ति थी, जिससे इन्होंने अकल्पनीय कार्य कर दिखाया। लेकिन इसके पीछे की हकीकत यह है कि इन सबका मनोबल और आत्मविश्वास बहुत ऊंचा था और यह आत्मविश्वास स्वयं की इच्छाशक्ति को पहचानने से ही प्राप्त हुआ था।

हम सब ईश्वर की बनाई एक रचना हैं इसीलिए हमें कभी भी किसी से कुछ विशेष पाने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए अन्यथा इससे हमारी खुद पर आत्मनिर्भरता कम होती है साथ ही यह भी जरूरी नहीं है कि हर कोई हमारी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा ही। इससे अच्छा है कि हम अपने भीतर की उर्जा को पहचानें। प्रकृति की हर रचना अनमोल है। ईश्वर ने हर वस्तु में एक उपयोगिता भरी है। फिर इंसान तो चेतनशील है। उसके अंदर ईश्वर ने जो प्रतिभा भरी है, वह अद्‌भुत और विलक्षण है। लेकिन आत्मविश्वास की कमी से हम अपने भीतर छिपी उस प्रतिभा से अंजान रहते हैं और उसका उपयोग नहीं कर पाते।

यदि हम स्वयं को महत्वपूर्ण समझेंगे तभी दूसरों को अपने महत्वपूर्ण होने का अनुभव कराने में समर्थ होंगे। यदि आप स्वयं से प्रेम करेंगे तभी औरों को स्नेह दे पाएंगे। जिन्हें अपनी कमजोरियों की जानकारी हो जाती है तो उनकी आगे की राह आसान हो जाती है। हम अगर अपने अंदर की शक्ति को पहचान लें तो कोई भी कार्य कठिन नहीं है। हमारे बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों, महात्माओं ने अपने आत्मविश्वास के बल से ही अपनी आंतरिक शक्तियों को जागृत कर ज्ञान का प्रकाश पूरी दुनिया में फैलाया है। आत्मविश्वास का आधार आपकी सही सोच होती है। जिसकी जैसी सोच होती है वह वैसा ही सोचता है। इंसान की सोच सिर्फ खुद का ही नहीं उसके आस–पास के समाज का भी निर्माण करती है। हमारी सोच, हमारे जीवन में एक अदृश्य शक्ति का काम करती है जो आपको बड़े–बड़े लक्ष्य निर्धारित करने की हिम्मत और उनकी तरफ बढ़ने की

प्रेरणा देती है। आपकी सही सोच जीवन के माहौल को सकारात्मक बनाती है। हम जिंदगी में सफल तभी हो सकते हैं जब हम सफलता हासिल करने के लिए अपनी सोच को सकारात्मक रखेंगे। सभी के जीवन में उतार–चढ़ाव आते हैं, लेकिन आप इनका सामना अपने विवेक और आत्मविश्वास से करते हैं तो इन समस्याओं से जल्दी मुक्ति पा सकते हैं।

आत्मविश्वास पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण है आपका व्यवहार। व्यवहार मनुष्य का एक विशिष्ट गुण होता है जिसे वह अपने आस–पास के लोगों एवं वातावरण द्वारा सीखता है जो मनुष्य जिस प्रकार के समाज में, परिवार में, जिन लोगों के बीच रहता है, उनके द्वारा किये गये आचरण को स्वयं में लाता है और स्वयं भी उसी समूह, परिवार अथवा समाज का हिस्सा बनकर उसी प्रकार व्यवहार करता है। व्यवहार मात्र इस बात से जुड़ा है कि आप अन्य से कैसा व्यवहार अपेक्षित करते हैं। यदि आप सभी से यह अपेक्षा करते हैं कि सभी आपसे अच्छा व्यवहार करें तो इसकी शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी।

आत्मविश्वास हमारे संवाद कौशल को भी सबल करता है। जब हम खुद पर यकीन रखते हैं, तो हम अपने विचारों और विचारों को तरीके से प्रकट करने में आत्म–सुन्दर और प्रभावशाली होते हैं। यह हमारी प्रतिबद्धता को भी बढ़ावा देता है और हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहने में मदद करता है। आत्मविश्वास का प्रारंभ अपनी मानसिक स्थिति से होता है। जब हम अपने आप पर विश्वास करते हैं, तो हम खुद को समर्पित तरीके से काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह हमारी सोच और क्रियाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है और हमें समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद करता है।

जब आप अपने को महत्व देते हुए अपनी योग्यता व क्षमता को समझ लेते हैं तो उसके बाद जो आत्मविश्वास उत्पन्न होता है तब ऐसा हो ही नहीं सकता कि हमें अपेक्षित सफलता न मिले। कुछ व्यक्ति काम करने से पहले ही हार मान लेते हैं और कुछ व्यक्ति काम के बारे में सिर्फ सोचते रहते हैं परंतु कर नहीं पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है इसलिए कोई भी बड़ा काम करने की पहली अनिवार्यता आत्मविश्वास ही है।

इस प्रकार ये आत्मविश्वास का ही जादू है जो हमारे जीवन को सफलता और संतोष से भर देता है। यह हमें समय के साथ स्थिरता और सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है और हमारे जीवन को और भी प्रासंगिक तरीके से जीने का साहस प्रदान करता है।

"जब आप अपने आत्मविश्वास में पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं तो आप हर मुश्किल को पार कर सकते हैं।"

–स्वामी विवेकानंद

धातु विषाक्तता

चंद्र कांत मौर्य
तकनीकी अधिकारी 'बी'
रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर

धातु विषाक्तता वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। जिसका सामना पूरा विश्व कर रहा है। आर्सेनिक, सीसा, पारा, केडमियम, कॉपर, क्रोमियम आदि विषाक्त धातुएं जीव–जंतुओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। ये धातुएं या तो जीवाश्म ईंधन जलने से या रासायनिकों के प्रयोग से वायुमंडल में उत्सर्जित होती हैं। यहां से ये धातुएं जैव श्रृंखला में पहुंच जाती हैं और फिर ये जीव–जंतुओं के शरीर में आ जाती हैं। आजकल लगभग सभी पदार्थ जैसे हवा, पानी, भोजन, मिट्टी आदि भारी धातुओं द्वारा प्रदूषित हो चुके हैं, जिससे पौधों और जीव–जन्तुओं के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है। भारी धातुएं मानव के शरीर में खाने–पीने और श्वसन द्वारा पहुंचती हैं। शरीर में पहुँचकर ये धातुएं जैविक ऊतकों या कोशिकाओं में जमा हो जाती हैं, जो बाद में कई रोगों का कारण बनती हैं।

विषाक्त धातुओं के स्रोत –

मानवजनित स्रोत –

1. औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ भारी धातुओं के प्रदूषण का प्रमुख मानवजनित स्रोत है।
2. ऐसे कई धातुकर्मीय संयंत्र जैसे सीमेंट के कारखाने और रासायनिक उद्योग हैं जो आर्सेनिक, सेलेनियम, जिंक, मर्करी, केडमियम आदि का उत्सर्जन करते हैं।
3. कोयला और सीमेंट उत्पादन में दहन के कारण काफी मात्रा में कैडमियम, सेलेनियम और आर्सेनिक उत्सर्जित होते हैं।
4. तेल के जलाने से निकेल, वेनेडियम और मर्करी का उत्सर्जन होता है।
5. पेट्रोलियम रिफाइनिंग, इस्पात और उर्वरक उत्पाद इत्यादि गतिविधियों से केडमियम, क्रोमियम, तांबा और आयरन आदि उत्सर्जित होते हैं।

6. पौधों के पोषक तत्वों तथा उनकी सुरक्षा के उपायों में प्रयोग होने वाले कीटनाशकों या उर्वरकों से भी मिट्टी में भारी धातुओं की मात्रा बढ़ रही है, जैसे फॉसफेटिक उर्वरकों में केडमियम का पाया जाना। शाकनाशी पदार्थों जैसे– मोनोसोडियम मिथेन आर्सेनेट में आर्सेनिक का पाया जाना।

7. कोयला आधारित बिजली संयंत्र, धातु प्रदूषण के संभावित स्रोत हैं। भारतीय कोयले में आर्सेनिक काफी मात्रा में पायी जाती है। ऐसा माना जाता है कि कोयले का दहन धातुओं के मानवजनित उत्सर्जन के मुख्य स्रोतों में से एक है।

8. अधिकांश डिटर्जेंटों में आयरन, मेगनीज, क्रोमियम, कोबाल्ट, जिंक आदि तत्व होते हैं। व्यापक रूप से प्रयोग किए जाने वाले साबुनों तथा डिटर्जेंटों में आर्सेनिक की काफी सांद्रता होती है।

सभी साबुन और डिटर्जेंट प्रयोग के समय सरलता से आर्सेनिक मुक्त करते हैं, जो सतह और भूमिगत जलों तक पहुंच जाता है।

प्राकृतिक स्रोत –

1. प्राकृतिक स्रोतों में धातुएं मुख्यतः चट्टानों के अपक्षय, कार्बनिक पदार्थों के अपघटन, अकार्बनिक सिलिकामय या कैल्सियम कवचों, जैविक अवशेषों, नदी तल आदि के अपक्षय या भौतिक – रासायनिक परिवर्तनों के कारण उत्सर्जित होती हैं।

2. भूतापीय स्रोत जैसे ज्वालामुखीय विस्फोट भी काफी मात्रा में वातावरण में मरकरी प्रदूषण फैलाते हैं।

3. कुछ भूवैज्ञानिक स्रोत भी विषाक्त धातुओं के बड़े स्रोत होते हैं, जैसे– राजमहल बेसिन का गोडवाना, कोयला (आर्सेनिक 200 mg/kg), बिहार माइकाबेल्ट (आर्सेनिक 0.08-0.12%), सन बैली गोल्ड पट्टी (आर्सेनिक 2.8%) आदि दार्जिलिंग हिमलाई पट्टी (आर्सेनिक 0.8%) आदि।

विषाक्त धातुएं तथा उनका स्वस्थ जीवन पर प्रभाव–

कुछ धातुएं जैसे कि आयरन, कॉपर, कोबाल्ट, मैगनीज, मोलिब्ड्नम, स्ट्रॉन्सियम, जस्ता आदि स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं परंतु कुछ ऐसी गैर आवश्यक धातुएं हैं, जिनसे हमेशा विषाक्तता का डर बना रहता है। इनमें कैडमियम, पारा, सीसा और आर्सेनिक प्रमुख हैं। कुछ प्रमुख विषाक्त धातुओं के स्रोत तथा विषाक्तता के लक्षण निम्नलिखित हैं–

1. कैडमियम की विषाक्तता –

स्रोत – प्लास्टिक, बैटरी, पिगमेंट, उर्वरक, सिगरेट, रंजक इत्यादि। लक्षण– उल्टी, मतली, दस्त, गुर्दे की समस्या, कैंसर, तंत्रिका तथा हड्डियों से संबंधित रोग, दाँतों में पीलापन (कैडमियम रिंग), गंध की अनुभूति न होना, मुख का सूख जाना आदि।

सन 1947 में जापान की जित्सु नदी के समीप गांवों में कैडमियम की विषाक्तता के कारण एक असामान्य और दर्दनाक रोग देखा गया था, जिसे इताई–इताई कहा जाता है। इस रोग के मुख्य लक्षण थे– कमर दर्द तथा पैर की मांसपेशियों में दर्द।

2. लैड (सीसा) की विषाक्तता –

स्रौत पेंट, बैटरी, पाइपलाइन, पेट्रोलियम (टेट्रा एथाइल लैड एंटीनाकिंग एजेंट), खिलौने इत्यादि।

लक्षण–उल्टी, खूनी दस्त, अंगुलियों, कलाई या टखनों में कमजोरी, एनीमिया, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, ऐंठन, तंत्रिका तंत्र की समस्या आदि।

लंबे समय तक सीसा विषाक्तता के कारण नेफ्रिटिस (क्रोनिक किडनी संक्रमण) सबसे आम परिणामों में से एक है।

3. मर्करी (पारा) की विषाक्तता–

स्रोत – थर्मामीटर, फ्लोरसेंट, लाइटबल्ब, चिकित्सीय उपकरण, कुछ कीटनाशक, संदूषित मछलियां, सिंदूर, सीमेंट तथा इस्पात के कारखाने, ज्वालामुखी इत्यादि।

लक्षण – मांसपेशियों की कमजोरी, दृष्टि की कमजोरी, लकवा, प्रमस्तिष्कीय कार्यों में गड़बड़ी, चिड़चिड़ापन, उदासीनता, अवसाद और मनोविकार आदि।

जापान में मिनीमाटा खाड़ी की मर्करी से संदूषित मछलियां खाने से वहां के मछुआरों को 'मिनीमाटा रोग' हो गया था, जिसके कई मामलों में कोमा और मृत्यु की घटनाएं सामने आयीं थीं।

4. आर्सेनिक की विषाक्तता –

स्रोत– ज्वालामुखी के वाष्प, समुद्र तथा खनिजीय जल, साबुन, डिटर्जेंट, काँच तथा चमड़े की वस्तुएं इत्यादि।

लक्षण– त्वचा कैंसर, कंज्क्टीवाइटिस, मेलानोसिस, मतली, उल्टी, पेट दर्द, दस्त, सिर दर्द, चक्कर आना, लकवा, उदासीनता, हथेलियों और तलवे पर विचित्र रंग की त्वचा हो जाना और कमजोरी इत्यादि।

आर्सेनिक से दूषित, पीने के पानी का लंबे समय तक प्रयोग जठरतंत्र, त्वचा, यकृत. और तंत्रिका ऊतकों को क्षति पहुंचाता है। इसके अलावा आर्सेनिक त्वचा कैंसर और किडनी फेल होने जैसी बीमारियों का कारण है।

5. मैगनीज की विषाक्तता –

मैगनीज एक ज्ञात म्यूटाजन है, जो आनुवंशिक उत्परिवर्तन कर सकता है। पीने के पानी में मैगनीज का दीर्घकालीन उपभोग तंत्रिका तंत्र को हानि पहुंचाता है। आई.एस.आई. ने पीने के पानी में 0-5mg/1 मैगनीज की सीमा निर्धारित की है।

6. आयरन की विषाक्तता–

आयरन सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला तत्व है, जो जैविक प्रणाली के लिए अतिआवश्यक है। पीने के पानी में आयरन के कारण पानी का स्वाद कसैला हो जाता है और H_2S गैस बनने के कारण उससे दुर्गंध आने लगती है। आई.एस.आई. ने पीने के पानी में 0-03mg/1 आयरन की सीमा निर्धारित की है।

7. क्रोमियम की विषाक्तता–

क्रोमियम सबसे कम विषाक्त धातुओं में से एक है। क्रोमियम मानव शरीर में कुल मात्रा की तुलना में किसी भी हानिकारक प्रभाव के बिना 100–200 गुना तक सहन कर सकता है। आई.एस.आई. ने पीने के पानी में 0-05mg/1 आयरन की सीमा निर्धारित की है।

धातु आयनों की जीवन के विकास और निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका है। इनके बिना जीवन का विकास तथा निर्वाह नहीं हो सकता है जैसे–सोडियम, पोटैशियम, मैगनीशियम, कैल्शियम आदि आयन जीवन के अस्तित्व के लिए अति आवश्यक हैं। इसके अलावा मानव शरीर की वृद्धि, विकास तथा जनन के लिए कुछ भारी धातुएं भी अतिआवश्यक हैं, जैसे– ग्लूकोज के निर्माण में मैगनीज काम आता है, विटामिन बी–12 में कोबाल्ट पाया जाता है, रक्त में ऑक्सीजन को लाने/ले जाने वाले हीमोग्लोबिन में आयरन पाया जाता है तथा कुछ इंजाइमों में कॉपर भी पाया जाता है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि किसी जीव की वृद्धि तथा विकास के लिए कुछ धातुओं का एक निश्चित मात्रा में पाया जाना अतिआवश्यक है, परंतु अत्यधिक आपूर्ति होने पर विषाक्त तथा घातक प्रभाव हो सकते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर

ग्वालियर, मध्य प्रदेश में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) कार्यरत है। प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा–प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर नराकास, ग्वालियर का सचिवालय है। वर्तमान में नराकास, ग्वालियर की अध्यक्ष, महालेखाकार महोदया सुश्री प्रिया पारिख एवं सचिव, वरिष्ठ उप महालेखाकार श्री दीन दयाल वर्मा हैं। वर्तमान में नराकास, ग्वालियर में कुल 68 सदस्य कार्यालय हैं।

दिनांक 05.12.2022 को तत्कालीन अध्यक्ष नराकास श्री डी. साहू जी की अध्यक्षता में नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर के पंचम तल स्थित सभा कक्ष में संपन्न हुई, जिसमें 30 सितंबर, 2022 को समाप्त छमाही के हिंदी के प्रगामी प्रयोग से सम्बंधित प्रतिवेदनों की समीक्षा का वाचन किया गया। उसके पश्चात माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों का अभिवादन किया गया एवं उक्त समीक्षा पर चर्चा की गई। बैठक में वर्ष 2021–22 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु तथा वर्ष के दौरान नराकास, ग्वालियर के तत्वावधान में नराकास, ग्वालियर वार्षिक कार्यक्रम 2022 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की गई तथा माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन

प्रथम पुरस्कार– संयुक्त रूप से अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ग्वालियर एवं केंद्रीय विद्यालय, सीमा सुरक्षा बल, टेकनपुर, म.प्र., ग्वालियर

द्वितीय पुरस्कार– कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) म.प्र., ग्वालियर

तृतीय पुरस्कार– केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 4, एयर फोर्स स्टेशन, महाराजपुर, ग्वालियर

वार्षिक पत्रिका प्रकाशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन

प्रथम पुरस्कार– कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) म.प्र., ग्वालियर (गोपाद्री)

द्वितीय पुरस्कार– रक्षा अनुसन्धान एवं विकास स्थापना, म.प्र., ग्वालियर (प्रेरणा)

तृतीय पुरस्कार– केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो, ग्वालियर (संयम)

नराकास, ग्वालियर वार्षिक कार्यक्रम वर्ष 2022 के अंतर्गत आयोजित काव्य पाठ, रचनात्मक लेखन एवं तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को निम्नानुसार पुरस्कृत किया गया :–

काव्य पाठ प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार– श्री सुमित गौतम, कार्यालय आकाशवाणी, ग्वालियर

द्वितीय पुरस्कार– श्रीमती तूलिका शर्मा, कार्यालय आकाशवाणी, ग्वालियर

तृतीय पुरस्कार– श्री दिनेश कुमार, कार्यालय केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–4, ग्वालियर

सांत्वना पुरस्कार– श्रीमती वैभवी पटवर्धन, कार्यालय केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–1, ग्वालियर

रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार– श्रीमती तूलिका शर्मा, कार्यालय आकाशवाणी, ग्वालियर

द्वितीय पुरस्कार– श्री हरिओम कुमार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) म.प्र., ग्वालियर

तृतीय पुरस्कार– श्री अंकित गुप्ता, कार्यालय, आकाशवाणी, ग्वालियर

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार– श्री अनिल कटारिया, कार्यालय पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लि., ग्वालियर

द्वितीय पुरस्कार– श्री सुमित गौतम, कार्यालय आकाशवाणी, ग्वालियर

तृतीय पुरस्कार– सुश्री शिवा चतुर्वेदी, कार्यालय केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–2, ग्वालियर

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,ग्वालियर

* प्रशस्ति पत्र *

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2021–22 में विभागीय हिन्दी पत्रिका का वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालयों में 'गोपाद्री' के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांकः– 05.12.2022

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,ग्वालियर,
एवं प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–प्रथम),
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियां

नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियां

नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियां

नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियां

नराकास, ग्वालियर की 88वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियां